The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 4 | April 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

वन्दना शुक्ला
सहा.प्राध्यापक-हिंदी, श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 16-04-2025

Published: 10-05-2025

Keywords:
राष्ट्रीयता,वीरता, देशोद्धार, उत्सर्ग, स्वनुभूति।

ABSTRACT

राष्ट्र से सम्बन्धित भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और लोक जीवन से प्रेरित काव्य राष्ट्रीय काव्य कह सकते हैं। अपने देह के प्रति अगाध प्रेम में, अपनी संस्कृति, सभ्यता पर्व धर्म के गौरव में देह की सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक दशाओं में सुधार के प्रयत्न आदि में राष्ट्रीय भावना प्रस्फुटित होती है। राष्ट्रीयता की भावना एक भौगोलिक इकाई के प्रति वहाँ के वासियों की रागात्मिकता वृत्ति का प्रस्फुटन भी, एक ऐसा द्रव्य है। धर्म, राजनीति, समाजशास्त्र आदि से इसका महत्व कम से कम एक दृष्टि से निःसंदेह अधिक है।। परन्तु राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप स्वतंत्रता की प्राप्ति से पहले उसकी गतिविधि, लक्ष्योद्देश्य तथा विचार दृष्टि के कारण भिन्न-भिन्न पाया जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में सुभद्रा कुमारी चैहान के काव्य में राष्ट्रीय भावना के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया गया है। सुभद्रा जी राष्ट्रीय चेतना की सजग कवयित्री रही है, जिसका प्रभाव उनके काव्य में झलकता है।

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15412656

भूमिका:

हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का स्रोत तब से हुआ, जब हिन्दी नव-निर्माण के पथ पर प्रथम कदम रखती थी। स्वयंभू, सोमप्रभु सूर्य और पुष्पदंत के काव्य में राष्ट्रीय भावना अपने शुद्ध रूप में रही है। वीरगाथा काल के अधिकांश साहित्य देश और जाति की रक्षा में प्राणों को उत्सर्ग करने वाले वीरों के चरित्र वर्णन एवं युद्ध वर्णन से पूर्ण है। भक्तिकाल में तुलसीदास ने अन्यत्र भारत महिमा का गान किया है। रीतिकाल में भूषण और लाल ने शिवाजी और छत्रसाल की वीरता की महिमा का गान किया है। युगों को पार करती हुई हमारी आधुनिक राष्ट्रीयता का सर्वप्रथम उद्घोष 1857 की क्रांति में सुनाई पड़ता है और तब से लेकर स्वतंत्र होने तक और इसके बाद अब तक भारतीय राष्ट्रीयता की एक लंबी कहानी है।

सुभद्रा कुमारी चौहान केवल राष्ट्र उन्नयन की बात ही नहीं करती वरन सामाजिक उत्थान की बात भी कहती है। सुभद्रा जी भारतीय समाज में व्याप्त तमाम बुराइयों को दूर करने की बात अपनी रचनाओं में करती हैं। उनके अनुसार समाज सुधार से ही राष्ट्र निर्माण संभव है। इसके लिए जहाँ कहीं से सहयोग और सुझाव मिले स्वीकार कर लेने चाहिए। देखा जाए तो सुभद्रा जी का काव्य राष्ट्रीय चेतना और जनजागृति के लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है, जो अपने समय को तो ध्वनित करेगा, साथ ही आगे के प्रत्येक समय में जनमानस को नई प्रेरणा प्रदान करेगा।

उद्देश्य:- प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य भूमंडलीकरण और उदारीकरण के दौर में राष्ट्रप्रेम की भावना जाग्रत करने के लिए सुभद्रा कुमारी चौहान की राष्ट्रीय काव्य रचनाओं की प्रासंगिकता का अध्ययन करना ।

पद्धति:- इस शोधपत्र लिखने के लिए विवेचनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। इस शोध में द्वितीय स्त्रोतों का उपयोग किया गया है, जिसमें सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित साहित्य और उसकी आलोचना समाहित है।

शोध विस्तार:

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता स्वानुभूतिमयी राष्ट्रीय सांस्कृतिक प्रगति से परिपूर्ण कविता है। गांधीवादी विचारधारा और कार्य-पद्धति के प्रति उनकी अनन्य निष्ठा थी। उन्हें विश्वास था कि कांग्रेस ही अंग्रेजी शासन के दमन और आतंक से देश की निष्कृति कर सकेगी। 1930 ई. में नागपुर में होने वाले कांग्रेस के स्वागत में उन्होंने लिखा था-

"आ भैया कांग्रेस, हमारी आकांक्षा की प्यार मूर्ति। राज्यहीन राजाओं के गत वैभव की स्वाभाविक पूर्ति। लूटे हुए दीनों की आशा, तू दासों का उज्ज्वल रत्न। भारतीय स्वातन्त्र्य प्राप्ति की तू चिरंजीवी साल्विक यत्न।"[1]

सुभद्रा जी कांग्रेस की प्रमुख कार्यकत्री और प्रथम महिला सत्याग्रही थी। गांधीवादी विचारधारा और कार्यपद्धति के प्रति उनकी अनन्य निष्ठा थी। इससे प्रभावित होकर उनकी वाणी उद्घोषमयी बनी। उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य था स्वतंत्रता की प्राप्ति। राष्ट्र की सेवा में त्याग,शौर्यता और बलिदान उन्हें वरदान जान पड़े। राष्ट्रोद्धार में सुभद्रा जी ने देशभक्ति को अपना कर्म का आधार बनाया। वे तत्कालीन नारी जागृत और राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक रही। विजयी मयूर में उन्होंने इस सत्याग्रही का रूप दिखाया

"तू ने पुकार की जोरों की,
वह चमका, गुस्से में आया।
तेरी आहों के बदले में,
उसने पत्थर-दल बरसाया।
तेरा पुकारना नहीं रुका,
तू डरा न उसकी मारों से,
भलिर को पत्थर पिघल गये,
आहाँ से और पुकारों से।"[2]

विदेशी सरकार की क्रोध रूपी काली घनघोर घटनाओं के अत्याचारों रूपी पत्थरों के भी उसने अपनी स्वराज्य की पुकार बंद नहीं की। अंत में सत्याग्रही वीर रुपी मयूर विजयी हो उठता है-

"विजयी मयूर जब कूक उठे, घन स्वयं आत्मदानी होंगे।
उपहार बनेंगे वे प्रहार, पत्थर पानी-पानी होंगे।।"[3]

वे कांग्रेस के कार्यकत्री और गांधी जी के भक्तिनी थीं। उनका विश्वास था कि भारतवासियों की आशाओं और आकांक्षाओं का मूर्तिमान स्वरूप है कांग्रेस। उसको स्वातंत्र्य युद्ध की सात्विक कार्य दिशा माना गया। देशभक्तों को न संगीनों का भय है, न तोपों का। वे न दमन नीति से आक्रान्त हैं और न ही हथकड़ियों से भयभीत है।

"है यही आदि गांधीयुग का, जो बापू ने विस्तारा है,
है यही अन्न लोहे के दिन, जिसका विज्ञान सहाय है।

विज्ञानी की है परम सिद्धि जग को लोहे से भर देना,
है हंसी खेल तुमको बापू, लोहे को पानी कर देना ।"[4]

इस प्रकार वे गांधी जी के नेतृत्व में राष्ट्र सेविका बनीं। उन्होंने इस कार्य को पूर्ण निष्ठा और समर्पण वृत्ति से आगे बढ़ाया। विदेशी शासन का दण्ड विधान देशभक्तों को गौरवान्वित करने वाला सिद्ध हुआ। देश में गांव-गांव में फैलने वाली आजादी की भावना और विदेशी सरकार के प्रति घृणा की भावना का विविध रूपों में उन्होंने वर्णन किया है। युग की देश की पुकार को सुभद्रा जी ने वाणी दी है। गांधी जी की विचारधारा से प्रभावित होकर वे उनके अहिंसात्मक विचारों, नैतिक एवं आत्मबल की श्रेष्ठता तथा सत्य के वास्तविक स्वरूप की पथ-प्रदर्शक बनीं। गांधी जी ने जो असहयोग आंदोलन चलाने, सत्य, सेवा और अहिंसा का शाश्वत मन्त्र लेकर कूद पड़े थे। उसका असर तत्कालीन राष्ट्र कवियों पर पड़े बिना नहीं रह सकता था। अतः सुभद्रा जी कहती है-

"हमारी प्रतिभा साध्वी रहे,
देश के चरणों पर ही चढे।
अहिंसा के भावों में मस्त,
आज यह विश्व जीतना पड़े।"[5]

उनका भी यही विश्वास था कि विश्व जीतने के लिए हमें चरणों को बिना हिचकते हुए आगे बढ़ाना है। अहिंसा की नीति, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार तथा असहयोग आंदोलन की त्रिवेणी में देश के नवयुवकों का अवगाहन करके वे उनमें नई स्फूर्ति, नई चेतना लाने की प्रेरणा देती रही है। उनके लिए जेल भी कृष्ण मन्दिर के समान था-

"कृष्ण मन्दिर है प्यार बन्धु,
पधारों निर्भयता के साथ।
तुम्हारे मस्तक पर ही सदा,
कृष्ण का वह शुभचिन्तक हाथ।।"[6]

उन्हें वे आत्मविश्वास दिलाती हुई लिखती है-

"तुम्हारी दृढ़ता से जग पड़े,
देश का सोया हुआ समाज।
तुम्हारी भव्य मूर्ति से मिले,
शक्ति वह विकट त्याग की आज।।"[7]

अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए त्याग और बलिदान देशभक्तों की मनोवृत्ति रही है। उनको सेवा और समर्पण, करुणा और अहिंसा का वरदान था। वस्तुतः यह जेल यात्रा करने वाले देशभक्तों के व्यक्तित्व का नैतिक उन्नयन था। जेल उनके लिए पावन जन्म स्थान था, यथा-

"जेल हमारे मनमोहन के,
प्यारे पावन जन्म स्थान।
उसको सदा तीर्थ मानेगा,
कृष्ण भक्त यह हिन्दुस्तान।।"[8]

राजनीतिक चेतना के आने पर विदेशी शासन के अन्यायों की प्रतिक्रिया होती है। राष्ट्रभक्त के हृदय में विदेशियों के प्रति उपेक्षा और घृणा की भावना बढ़ती है और अपने देश से उसे निकाल देने के लिए अपने प्राणों का बलिदान करने से भी हिचकिचाहट नहीं होती। अपनी

जाति, धर्म, संस्कृति की निन्दा असह्य हो जाती है। देश के गौरव की रक्षा और गुलामी से मुक्ति प्राप्त करना देशभक्त का कर्तव्य है। उसमें किसी तरह का भेदभाव ही नहीं-

"आँसू छलके, याद आ गयी
राजपूत की वह बाला।
जिसने विदा किया, भाई को
देकर तिलक और माला।"[9]

देश की स्वाधीनता का पथ जो उन्होंने अपनाया था, वह अहिंसा और असहयोग का है। उस पथ पर आगे बढ़ने को अपने प्राणों को भी देश की छाती पर विनम्रता से अर्पण करने में ही एक प्रकार का आनन्द आता है, क्योंकि एक देशभक्त की मृत्यु अनेक देशभक्तों को जन्म देने में सामर्थ्य रखती है। देशभक्त की मृत्यु उसके जीवन से भी अधिक है-

"बढ़ जाता है मान वीर का,
रण में बलि होने से।
मूल्यवती होती सोने की
भस्म यथा सोने से ।। "[10]

वे मातृभूमि को एक दुलार करने वाली माँ के रूप में देखती है-

"जो स्वतंत्र होने को है,
पवन दुलार उन हाथों का।"[11]

उन्होंने अपने को भूलकर छोटे बच्चे की तरह उसके सम्मुख गाती है-

"किन्तु यह हुआ अचानक ध्यान,
दीन हूँ, छोटी हूँ, अज्ञान।
आतृ-मन्दिर का दुर्गम मार्ग,
तुम्ही बतला दो हे भगवान्।।"[12]

इसलिए उनके सामने वीरांगना झांसी की रानी का चित्र आया है। रानी का बलिदान स्वतंत्रता को जगाने में समर्थ था। उन्होंने विश्वास दिलाया है कि चाहे इतिहास सच्चाई का गला घोंट दे या अंग्रेजों की विजयोन्मुख सेना 'झांसी' को मिटा कर रख दें, पर रानी की वीरता की कहानी सदा के लिए कवियों की अमिट कहानी ही रहेगी-

"पर कवियों की अमर गिरा में,
इसकी अमिट कहानी,
स्नेह और श्रद्धा से गाली,
है वीरों की बानी।"[13]

झांसी की रानी की समाधि तो देशभक्तों के लिए एक परम तीर्थ है-

"इस समाधि में छिपी हुई
एक राख की ढेरी,
जल कर जिसने स्वतंत्रता की
दिव्य आरती फेरी।"[14]

वे पूछती हैं कि रानी लक्ष्मीबाई की वीरता को किसी को भी भूल नहीं सकते

"तेरा स्मारक तू ही होगी,
तू खुद अमिट निशानी है।"[15]

सुभद्रा जी ने अपने व्यक्तिगत प्रयासों के अलावा अपने काव्य से भी लोगों में राष्ट्रीयता की भावना जागृत की। उन्होंने अपने साहित्य रचनाओं से लोगों में नए संचार एवं उमंग का आगमन किया। उनके प्रत्येक रचना कहानी हो या कविता में भारतीय अतीत गौरवगान व राष्ट्रीयता की भावना भरी हुई है।

निष्कर्ष :

सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में राष्ट्रीय चेतना प्रमुख रूप से दिखाई देती है। उनकी कविताओं में देश प्रेम, स्वाधीनता संग्राम और स्वतंत्रता के लिए बलिदान की भावनाएँ स्पष्ट हैं। सुभद्रा जी की रचनाओं में देश के लिए त्याग, बलिदान और प्रेरणा के संदेश मिलते हैं। सुभद्रा जी ने प्राचीन गौरवमयी गाथाओं से प्रेरणा लेकर राष्ट्र के प्रति उत्सर्ग, राष्ट्र निर्माण तथा राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों का निदर्शन अपने काव्य में किया है। आधुनिक युग में जब राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हुआ तब कवियों ने जनजागृति के उद्देश्य से प्राचीन इतिहास का खूब बखान किया ताकि जनता अपने खोए हुए वैभव को पुनः प्राप्त करने का प्रयास कर सके। सुभद्राजी ने भी इसी प्रवृति को अपनाया और राष्ट्र निर्माण में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

- डॉ.हरि दामोदर,आधुनिक हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय भावना, पृ-स.2.
- मुकुल, स्वागत, पृ.स -113.
- मुकुल, विजयी मयूर, पृ.स-78.
- वही, पृ.स-79.
- मुकुल, वे कुंजे, पृ.स-106.
- मुकुल, विदाई, पृ.स-108.
- वहीं, पृ.स-108.
- वही, पृ.स-111.
- वही, पृ.स -111.
- प्रो. निर्मल तलवार, राष्ट्रीय काव्यधारा और सुभद्रा जी, सम्पा. ललित प्रसाद शुक्ल, बुन्देले हर बोलों के मुंह जिसने सुनी कहानी, पृ. स -31 से उद्धृत।
- मुकुल, पुरस्कार कैसा, पृ.स -130.
- मुकुल, व्यथित हृदय, पृ.स-101.
- प्रो. निर्मल तलवार, राष्ट्रीय काव्यधारा और सुभद्रा जी, सम्पा. ललित प्रसाद शुक्ल, बुन्देले हर बोलों के मुंह जिसने सुनी कहानी, पृ.स -30 से उद्धृत।
- वहीं, पृ.स-31 से उद्धृत
- मुकुल, झांसी की रानी, पृ.स -75